इकाई 10 : शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की भूमिका

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य
10.1 प्रस्तावना
10.2 शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की भूमिका और महत्व
10.2.1 रेडियो और शिक्षा : शक्ति और सीमाएँ
10.2.2 औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा
10.2.3 दूर शिक्षा
10.3 शैक्षिक प्रसारण : संभावनाएँ और चुनौतियाँ
10.3.1 शैक्षिक प्रसारण की तैयारी
10.3.2 शैक्षिक प्रसारण के श्रोता की पहचान
10.3.3 विषय का चयन
10.3.4 प्रस्तुतीकरण
10.4 भाषा और साहित्य का शिक्षण और रेडियो
10.4.1 रेडियो और भाषा शिक्षण
10.4.2 रेडियो और साहित्य शिक्षण
10.5 विज्ञान और सामाजिक विज्ञान का शिक्षण और रेडियो ।
10.5.1 रेडियो और विज्ञान शिक्षण
10.5.2 रेडियो और सामाजिक विज्ञान का शिक्षण
10.6 शिक्षा के माध्यम के रूप में रेडियो का मूल्यांकन
10.6.1 शैक्षिक रेडियो प्रसारणों का मूल्यांकन
10.6.2 रेडियो से शिक्षा : समस्याएँ और समाधान
10.7 सारांश
10.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की भूमिका को समझने की कोशिश करेंगे! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप शिक्षा के एक महत्त्वपूर्ण माध्यम के रूप में रेडियो के महत्त्व, उसमें अंतर्निहित संभावनाओं और उसकी सीमाओं को पहचान सकेंगे। इस इकाई में शिक्षा के विभिन्न रूपों और प्रमुख अनुशासनों के अध्ययन–अध्यापन में रेडियो के उपयोग पर चर्चा की गयी है ताकि आप एक छात्र और शिक्षक दोनों ही भूमिकाओं में रेडियो का बेहतर इस्तेमाल कर सकें। इस इकाई में शैक्षिक प्रसारण की संभावनाओं के साथ–साथ उसकी सीमाओं, समस्याओं और उनके समाधान को भी रेखांकित करने की कोशिश की जाएगी। इस इकाई का उद्देश्य यह भी है कि आप शैक्षिक प्रसारण के क्षेत्र में नए और सृजनात्मक प्रयोग करें और उसे श्रोताओं के लिए अधिक से अधिक समृद्ध बनाएँ।

10.1 प्रस्तावना

आज देश के सामने एक बड़ी चुनौती हर घर और हर नागरिक तक शिक्षा की रोशनी पहुंचाना है। आज दुनिया एक ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के युग में प्रवेश कर चुकी है जिसकी बुनियाद शिक्षा है। अफसोस

की बात यह है कि देश में अभी भी निरक्षर लोगों की तादाद कुल आबादी की 30 प्रतिशत से अधिक है। यही नहीं, एक बड़ी आबादी उच्च और माध्यमिक शिक्षा के दायरे से बाहर है जबकि महिलाओं और समाज के कमजोर वर्गों के एक बड़े हिस्से की पहुंच औपचारिक शिक्षा तक नहीं हो पा रही है। इसके कई गहरे सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारण हैं। उन कारणों की तह में न भी जाएं तो भी शिक्षा के प्रसार की बढ़ती जरूरत से इंकार नहीं किया जा सकता है। जाहिर है, इसके लिए ऐसे उपाय और माध्यम तलाशने की जरूरत है जिससे शिक्षा की रोशनी को हर घर और नागरिक तक पहुंचाया जा सके। रेडियो ऐसा ही एक सशक्त और प्रभावशाली माध्यम है जिसके जरिए न सिर्फ उन लोगों तक पहुंचा जा सकता है जो औपचारिक शिक्षा के दायरे से बाहर हैं बल्कि उन छात्रों को भी बेहतर शिक्षा दी जा सकती है जो औपचारिक शिक्षा के तहत अध्ययन कर रहे हैं। रेडियो की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह शिक्षा का एक सस्ता, सर्वसुलभ, स्थानीय जरूरतों के अनुकूल और बहुत सृजनात्मक माध्यम है। यही कारण है कि दुनिया भर में शिक्षा के एक माध्यम के रूप में रेडियो का खूब इस्तेमाल हुआ है और आज भी हो रहा है। दुनिया ही नहीं, भारत में भी रेडियो के जरिए शैक्षिक प्रसारणों का अनुभव बहुत उत्साहवर्धक रहा है।

इसलिए आज जरूरत पिछले अनुभवों से सीखते हुए शिक्षा के बदलते परिदृश्य और नयी चुनौतियों के अनुसार रेडियो के जरिए शैक्षिक प्रसारणों को और सृजनात्मक और प्रभावी बनाने की है। अच्छी बात यह है कि नीति निर्माताओं और शैक्षिक नियोजकों ने शिक्षा के प्रसार में रेडियो की भूमिका और महत्त्व को स्वीकार करते हुए सामुदायिक रेडियो और शैक्षिक रेडियो (जैसे ज्ञानवाणी) को बढ़ावा देना शुरू किया है। ऐसे में, शिक्षा के प्रसार में रेडियो की बढ़ती भूमिका के मद्देनजर यह जरूरी हो जाता है कि उसका प्रयोग कुशलता और योजना के साथ किया जाए।

10.2 शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की भूमिका और महत्त्व

शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की भूमिका दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि देश में कई विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों ने शैक्षिक प्रसारण के लिए रेडियो केन्द्रों की स्थापना की है और आकाशवाणी पर भी शैक्षिक प्रसारणों का समय लगातार बढ़ रहा है। इसके अलावा हाल ही में केन्द्र सरकार ने शैक्षणिक संस्थानों को सामुदायिक रेडियो शरू करने के लिए उदारतापूर्वक लाइसेंस देना शुरू कर दिया है। यही नहीं, एफएम टेक्नालॉजी के आने के बाद श्रोताओं में रेडियो की लोकप्रियता बढी है और शिक्षण संस्थान शिक्षा के प्रसार में इस टेक्नालॉजी का इस्तेमाल करने को उत्सुक दिख रहे हैं।

लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो के बेहतर इस्तेमाल के लिए यह जरूरी है कि रेडियो की शक्ति और सीमाओं को समझा जाए। यह इसलिए भी जरूरी है ताकि शिक्षा जैसे संवेदनशील विषय को श्रोताओं तक सही तरीके से पहुंचाने के लिए उस माध्यम की शक्ति और कमियों को पहचाना जाए।

10.2.1 रेडियो और शिक्षा : शक्ति और सीमाएँ

शिक्षा के माध्यम के बतौर रेडियो की कुछ शक्ति है तो कुछ सीमाएं भी हैं। सबसे पहले रेडियो की शक्ति को समझने की कोशिश करते हैं :

1. रेडियो वस्तुतः मौखिक परंपरा का वाहक है। भारत वाचिक परंपरा का देश है। इस तरह रेडियो भारतीय परंपरा के बहुत अनुकूल माध्यम है। शिक्षा के प्रसार के लिहाज से यह इसकी सबसे बड़ी ताकत है।
2. रेडियो की दूसरी सबसे बड़ी शक्ति यह है कि वह अपने श्रोताओं की कल्पनाशक्ति पर निर्भर है। कहने की जरूरत नहीं है कि शिक्षा बहुत हद तक विद्यार्थी की कल्पनाशक्ति पर निर्भर है। रेडियो के जरिए

छात्रों की कल्पनाशक्ति को न सिर्फ जगाया जा सकता है बल्कि इसके माध्यम से उनके अंदर सृजनात्मकता और खोजपरकता को बढ़ाया जा सकता है।

3. रेडियो एक वैयक्तिक माध्यम है। हालांकि वह एक साथ हजारों लाखों लोगों तक पहुंच सकता है लेकिन दूसरी ओर उसकी खूबी यह है कि उसी समय वह हर व्यक्ति को ऐसे संबोधित कर सकता है जैसे उन्हीं से मुखातिब हो। उसकी यह अंतक्रियात्मकता और हरेक श्रोता से निजता शिक्षा के प्रसार की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है।
4. रेडियो की एक और खूबी यह है कि उसके जरिए बिना कहीं गए भी दुनियाभर में तमाम जगहों और विभिन्न किस्म की छवियों को शब्दों और आवाजों के माध्यम से जीवंत किया जा सकता है। शिक्षा के लिहाज से रेडियो की इस खूबी का इस्तेमाल छात्रों को उन छवियों और जगहों के बारे में बताने के लिए किया जा सकता है।
5. इसी से जुड़ी रेडियो की एक खूबी यह है कि वह बिना किसी समस्या के समय और कालखंड के इस पार या उस पार आ जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि रेडियो पर एक ही झटके में आप सुबह या रात का दृश्य पैदा कर सकते हैं या मुगलकाल की बात करते हुए आप उसी समय 21वीं सदी में वापस लौट सकते हैं।
6. रेडियो की एक और खूबी यह है कि यह सस्ता और सुविधाजनक माध्यम है। भारत जैसे देश के लिए तो यह सबसे उपयुक्त माध्यम है। इसके जरिए शिक्षा का प्रसार बहुत आसान और सस्ता हो सकता है।

लेकिन रेडियो की कुछ सीमाएं भी हैं। उन सीमाओं पर पार पाने के लिए उनसे परिचित होना बहुत जरूरी है। रेडियो की प्रमुख सीमाएं निम्नलिखित है :

1. रेडियो की पहली सीमा यह है कि इसमें श्रोता को पूरी तरह से अपनी श्रवण शक्ति पर निर्भर रहना पड़ता है जबकि उसके पास आंख, नाक जैसी इंद्रियां भी हैं। ऐसे में अगर श्रोता से कोई भी चीज छूट जाए या किसी कारण से कोई चीज समझ में न आए तो प्रसारण प्रभावी नहीं रह जाता। इसलिए शैक्षिक प्रसारण के लिए काम करने वाले लोगों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि न सिर्फ वह श्रोताओं की श्रवणशक्ति का इस्तेमाल करें बल्कि वे उनके सामने पूरा चित्र उपस्थित करने की कोशिश करें। यही नहीं, उन्हें रेडियो में शैक्षिक प्रसारण के लिए पाठ तैयार करते हुए इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कैसे छात्रों को बांध कर रखा जाए।
2. इसी से जुड़ी दूसरी समस्या है कि आमतौर पर रेडियो का श्रोता उसे पृष्ठभूमि में रखकर सुनता है यानी रेडियो के अधिकतर श्रोता उसे सुनते हुए कुछ और भी कर रहे होते हैं। इस कारण वह बहुत ध्यान से और केंद्रित होकर रेडियो नहीं सुनते हैं। शैक्षिक प्रसारण के लिए यह बड़ी चुनौती है क्योंकि अगर श्रोता (विद्यार्थी) का पूरा ध्यान शैक्षिक प्रसारण पर नहीं होगा तो कार्यक्रम का उद्देश्य विफल हो जाएगा। इसलिए शैक्षिक प्रसारण से जुड़े लोगों का अपने श्रोताओं में इतनी उत्सुकता, रुचि और समझ पैदा करनी होगी कि वे शैक्षिक कार्यक्रमों को ध्यान से सुनें और गुनें।
3. इसमें कोई दो राय नहीं है कि रेडियो शिक्षा का एक बेहतर माध्यम है। इसके जरिए आम छात्रों से लेकर अनपढ़ या पढ़े–लिखे किसानों, स्वयं सहायता समूहों और श्रमिकों को विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जा सकती है लेकिन शिक्षा के कई ऐसे क्षेत्र भी हैं जहां रेडियो से दी गयी शिक्षा पर्याप्त नहीं होती है या रेडियो के जरिए शिक्षा देना मुश्किल होता है। विशेषकर विज्ञान, चिकित्सा और इंजीनियरिंग से लेकर दृश्य कला, अभिनय जैसे क्षेत्र जहां प्रायोगिक कार्य और आमने–सामने का शिक्षण जरूरी है, वहां रेडियो की सीमाएं स्वतः स्पष्ट हैं। इन क्षेत्रों में रेडियो के जरिए शिक्षण की भूमिका सहायक की हो सकती है या फिर रेडियो शिक्षण के साथ–साथ अन्य माध्यमों (जैसे दृश्य और मुद्रित माध्यमों) का भी सहारा लेना पड़ेगा।
4. रेडियो वस्तुतः आवाज का माध्यम है, इसलिए उसमें आवाज और संगीत से जुड़े प्रभावों के इस्तेमाल की खूब गुंजाइश होती है। लेकिन अगर उनका सावधानीपूर्वक और योजना के तहत इस्तेमाल नहीं किया गया तो वे रेडियो कार्यक्रम के लिए समस्या भी पैदा कर देते हैं, खासकर उनके कारण श्रोता का ध्यान

मूल संदेश से भटक जाता है। इसलिए शैक्षिक प्रसारणों में आवाज से संबंधित प्रभावों (साउंड इफेक्ट्स)का प्रयोग जरूर करना चाहिए लेकिन सावधानी और समझ के साथ।

10.2.2 औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा

शिक्षा के इन दोनों प्रमुख रूपों– औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की उल्लेखनीय भूमिका हो सकती है। लेकिन औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की विशेष भूमिका की चर्चा से पहले इन दोनों के बीच के अंतर को समझना जरूरी है।

औपचारिक शिक्षा निश्चित सांस्थानिक ढांचे, पाठ्यक्रम, परीक्षा प्रणाली और समय सीमा में बंधी होती है। प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की इस शिक्षा में छात्र अध्ययन के अलावा और कुछ नहीं करता है। उसे एक निश्चित समय सीमा के अंदर पाठ्यक्रम पूरा करना और उसकी परीक्षा पास करनी पड़ती है जिसके बाद उसे डिग्री और प्रमाणपत्र हासिल होता है। औपचारिक शिक्षा में मुख्य जोर पाठ्यक्रम और . आमने–सामने के शिक्षण पर होता है। छात्र को कक्षा के अलावा पाठ्यपुस्तकों और अन्य सहायक पुस्तकों पर निर्भर रहना पड़ता है।
ऐसे में, औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की भूमिका एक सहायक की हो जाती है। उसे कक्षा और पाठ्यक्रम आधारित शिक्षण पर जोर देने के अलावा उसमें मददगार की भूमिका निभानी चाहिए। जैसे रेडियो के जरिए किसी पाठ पर श्रोता छात्रों और शिक्षक के बीच चर्चा या फिर सवाल–जवाब पर आधारित कार्यक्रम से श्रोता छात्रों को काफी लाभ हो सकता है। इसी तरह पाठ्यक्रम से संबंधित किसी विषय पर कुछ विशेषज्ञों के बीच परिचर्चा या फिर उस विषय से जुड़े किसी विशेष पहलू की चर्चा से भी विद्यार्थियों को काफी मदद मिल सकती है। कई बार पाठ्यक्रम से बाहर जाकर उस विषय पर चर्चा से छात्रों को अपनी समझ के दायरे को बढ़ाने में मदद मिल सकती है। यही नहीं, कई विषयों की रेडियो पर प्रस्तुति को दिलचस्प बनाया जा सकता है। जैसे इतिहास के किसी पाठ पर आधारित रेडियो ड्रामा या भूगोल के किसी पाठ पर रेडियो रूपक (फीचर) के जरिए उस विषय में विद्यार्थी को मनोरंजक तरीके से जानकारी दी जा सकती है।

अनौपचारिक शिक्षा से आशय ऐसी शिक्षा से है जो औपचारिक शिक्षा के दायरे से बाहर होती है। इसमें औपचारिक शिक्षा के विपरीत काफी लचीलापन होता है। इसमें उन लोगों को लक्षित करने की कोशिश होती है जो किसी भी कारण से औपचारिक शिक्षा हासिल नहीं कर पाते या उन्हें औपचारिक शिक्षा बीच में ही छोड़नी पड़ती है। जाहिर है कि अनौपचारिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य इसके लाभार्थियों को जागरूक बनाना और उपयोगी जानकारियों से लैस करना है। स्पष्ट है कि अनौपचारिक शिक्षा का दायरा बहत बड़ा है लेकिन उसके लाभार्थियों की जरूरतों, मानसिक अवस्था और ज्ञान के स्तर में काफी अंतर हो सकता है।

इसलिए अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की भूमिका काफी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। हालांकि अनोपचारिक शिक्षा में कई बार शिक्षक और आमने–सामने का शिक्षण भी होता है लेकिन वह पर्याप्त नहीं होता या अनियमित होता है या बहुत संक्षिप्त समय के लिए होता है, इसलिए रेडियो जैसा माध्यम उनके शिक्षण का प्रमख माध्यम बन जाता है। ऐसे में, रेडियो पर अनौपचारिक शिक्षा से संबंधित कार्यक्रम तैयार करते हुए न सिर्फ बहत सावधान और सचेत रहने की जरूरत है बल्कि पर्याप्त तैयारी भी जरूरी है। कार्यक्रमों का स्तर लक्षित लाभार्थियों को ध्यान में रखकर तय किया जाना चाहिए। अनौपचारिक शिक्षा के रेडियो कार्यक्रमों को अनौपचारिक होने के साथ–साथ उन्हें मनोरंजक, हल्का–फुल्का, सरल और दिलचस्प बनाने पर जोर होना चाहिए।

10.2.3 दूर शिक्षा

दूर शिक्षा प्रणाली में काफी हद तक औपचारिक शिक्षा प्रणाली की छाप दिखती है लेकिन वह औपचारिक शिक्षा प्रणाली की तुलना में काफी लचीला है। इसमें छात्र घर बैठे शिक्षा प्राप्त करता है। वह काम करने के

साथ ही साथ शिक्षा भी प्राप्त कर रहा होता है। दूर शिक्षा का भी पाठ्यक्रम होता है, उसकी भी परीक्षा होती है और संक्षिप्त समय के लिए संपर्क कक्षाएं भी होती हैं। लेकिन यहां शिक्षण सामग्री मुद्रित रूप में छात्र के पास भेजी जाती है और शिक्षण के लिए रेडियो और टीवी जैसे माध्यमों का सहारा लिया जाता है। स्पष्ट है कि दूर शिक्षा में शिक्षक की भूमिका काफी हद तक रेडियो निभाता है।

इसलिए दूर शिक्षा में रेडियो का बहुत अधिक महत्त्व है। एक तरह से दूर शिक्षा का छात्र रेडियो के जरिए अपने शिक्षण संस्थान से जुड़ा रहता है। उसे रेडियो के माध्यम से अपने विषय के शिक्षकों के व्याख्यान, चर्चाएं और सवाल–जवाब सुनने का अवसर मिल जाता है। इस तरह उसे शिक्षक की कमी महसूस नहीं होती है। दूर शिक्षा में रेडियो की महत्त्वपूर्ण भूमिका के मद्देनजर यह जरूरी हो जाता है कि शैक्षिक कार्यक्रमों का निर्माण पाठ्यक्रम को केंद्र में रखते हुए किया जाए और उसे अधिक से अधिक अन्तक्रियात्मक बनाया जाए। दूर शिक्षा से संबंधित रेडियो प्रसारण में छात्रों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए उसका कई बार पुनर्प्रसारण बहुत जरूरी होता है ताकि जो छात्र किसी कारणवश पहली बार प्रसारण न सुन पाएं. उन्हें दोबारा सुनने का अवसर मिल जाए।

बोध प्रश्न

1. शिक्षा के प्रचार प्रसार में रेडियो की क्या भूमिका है? (दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....

2. रेडियो की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।

   (क)..

   (ख) ....

   (ग) ....

10.3 शैक्षिक प्रसारण : संभावनाएँ और चुनौतियाँ

रेडियो के माध्यम से शैक्षिक प्रसारण की उपयोगिता दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। शैक्षिक प्रसारण की मांग लगातार बढ़ रही है। इसकी वजह यह है कि शिक्षा के माध्यम के रूप रेडियो ने हर तरह की शिक्षा को श्रोताओं तक पहुंचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। विशेषज्ञों का मानना है कि रेडियो के जरिए चार प्रकार के शैक्षिक प्रसारण हो सकते हैं :

- **समृद्धिमूलक प्रसारण** : इसके तहत कक्षा आधारित शिक्षण को सहयोग दिया जा सकता है और उसकी गुणवत्ता के स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है। इस तरह के शैक्षिक प्रसारण के जरिए छात्र को उन विषयों के विशेषज्ञों और श्रेष्ठ शिक्षकों की चर्चा और व्याख्यान सुनने का अवसर मिलता है।

- **प्रशिक्षणमूलक प्रसारण** : शैक्षिक प्रसारण का एक उद्देश्य शिक्षकों का प्रशिक्षण भी होता है। इस प्रसारण के तहत शिक्षकों को शिक्षण की नयी प्रविधियों से अवगत कराने के अलावा संबंधित विषयों के बारे में नयी जानकारियों से भी परिचित कराया जाता है।
- **विस्तार (एक्सटेंशन) प्रसारण** : इसके तहत समाज के अलग–अलग वर्गों को उनके कार्यों में सहयोग के लिए और उनकी कार्यकुशलता बढ़ाने के लिए नयी प्रविधियों से परिचित कराया जाता है। जैसे किसानों को किसी नए बीज के बारे में बताना और उसके उपयोग के तरीके से परिचित कराना।
- **विकासमूलक प्रसारण** : रेडियो के जरिए लोगों को विकास कार्यक्रमों के बारे में शिक्षित किया जा सकता है। इस प्रसारण के जरिए उन्हें विकास प्रक्रिया का भागीदार बनाया जाता है। जैसे शिक्षा के क्षेत्र में चल रही योजनाओं सर्व शिक्षा अभियान या दोपहर भोजन योजना के बारे में श्रोताओं को जानकारी देकर उन्हें उसका अंग बनने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

10.3.1 शैक्षिक प्रसारण की तैयारी

शैक्षिक प्रसारण की सफलता कई कारकों पर निर्भर करती है। इसलिए शैक्षिक प्रसारण के लिए कार्यक्रम तैयार करने से पहले पर्याप्त तैयारी बहुत जरूरी है। इस तैयारी के तहत शैक्षिक कार्यक्रम बना रही टीम को कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं पर गहराई से विचार करना चाहिए जैसे, कार्यक्रम किनके लिए बनाया जा रहा है (यानी श्रोता या लक्षित समूह), कार्यक्रम का उद्देश्य क्या है, वह कितनी देर का होगा, उसका स्वरूप क्या होगा (यानी वह व्याख्यान के रूप में होगा या चर्चा या कक्षा के रूप में या फिर ड्रामा अथवा फीचर के रूप में), उसकी स्क्रिप्ट की मुख्य थीम क्या होगी, उसमें संगीत और साउंड इफेक्ट्स का किस तरह से इस्तेमाल करना है आदि। टीम में सबकी जिम्मेदारी तय होनी चाहिए लेकिन कार्यक्रम टीम के सामूहिक योगदान से ही बनना चाहिए। कार्यक्रम निर्माण की सफलता उस योजना पर निर्भर होती है जो टीम की सामूहिक चर्चा से निकलती है।

दरअसल, किसी भी कार्यक्रम की सफलता उस योजना पर टिकी होती है जिसके तहत उसे बनाया जाना है। इसलिए कार्यक्रम की योजना बनाते हुए उसके हर पहलू को अच्छी तरह से ठोंक बजाकर देख लेना चाहिए। कई बार पॉयलट कार्यक्रम बनाकर उसके प्रभाव की जांच–पड़ताल कर लेना बेहतर होता है। शैक्षिक प्रसारण की तैयारी के तहत कार्यक्रम की रिकार्डिंग के यंत्रों की जांच पड़ताल से लेकर नियत समय के भीतर उसे तैयार करने पर निश्चित ही जोर देना चाहिए।

10.3.2 शैक्षिक प्रसारण के श्रोता की पहचान

शैक्षिक प्रसारण के लिए कार्यक्रम तैयार करने से पहले कार्यक्रम के निर्माता को स्पष्ट रूप से पता होना चाहिए कि उसका लक्षित श्रोता वर्ग कौन है? उसका चरित्र क्या है, उसकी जरूरतें क्या हैं और उसकी समझदारी का स्तर क्या है ? अगर श्रोता के प्रोफाइल के बारे में सही तरीके से पता नहीं होगा तो कार्यक्रम एक तरह से अंधेरे में तीर चलाने की तरह होगा। श्रोता के बारे में स्पष्टता रहने पर कार्यक्रम का विषय, उसका स्वरूप और स्तर, उसकी प्रस्तुति और प्रसारण के बारे में निर्णय करना आसान हो जाता है। शैक्षिक कार्यक्रम के श्रोताओं की विशेष जरूरतें होती हैं और अगर उसे ध्यान में रखकर कार्यक्रम बनाया जाएगा तो वह बहुत प्रभावी होगा।

10.3.3 विषय का चयन

शैक्षिक प्रसारण में जैसे श्रोता की पहचान बहुत जरूरी है, वैसे ही विषय का चयन भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। विषय के चयन में सबसे अधिक ध्यान इस बात पर दिया जाना चाहिए कि वह श्रोताओं (यानी विद्यार्थियों) के लिए कितना उपयोगी है ? विषय का चुनाव करते हुए न सिर्फ संबंधित छात्रों के पाठ्यक्रम को ध्यान में

रखना चाहिए बल्कि यह भी कि वह पाठ्यक्रम और कक्षा की पढ़ाई से आगे जाए। विषय का चयन करते हुए छात्र और शिक्षक श्रोताओं की फीडबैक और उनकी मांग को भी ध्यान में रखना चाहिए।

इसके अलावा विषय का चुनाव करते हुए यह भी ध्यान रखना चाहिए कि उनके बीच सुसंगति और तारतम्य हो। इसका तात्पर्य यह हुआ कि जिस विषय और जिस पक्ष को उठाया जा रहा है, उसे उसके तार्किक निष्कर्ष तक ले जाना चाहिए। जैसे अगर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर रेडियो के लिए शैक्षिक कार्यक्रम तैयार कर रहे हैं तो ऐसा नहीं होना चाहिए कि उसपर चर्चा असहयोग आंदोलन से शुरू करें और फिर उसके बाद 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम पर चर्चा करें और फिर भारत छोड़ो आंदोलन पर आ जाएं।

10.3.4 प्रस्तुतीकरण

चूंकि रेडियो श्रव्य माध्यम है, इसलिए उसमें अन्य किसी भी चीज की तुलना में प्रस्तुतीकरण सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। यह काफी हद तक प्रस्तुतीकरण पर निर्भर करता है कि श्रोता किसी शैक्षिक कार्यक्रम को किस तरह लेंगे ? शैक्षिक कार्यक्रमों की सफलता प्रस्तुतीकरण की कला पर इसलिए भी निर्भर है कि शैक्षिक कार्यक्रम मूलतरू मनोरंजन के कार्यक्रम नहीं हैं लेकिन श्रोता से बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करने और धैर्य की मांग करते हैं। प्रस्तुतीकरण ही वह कला और विज्ञान है जो न सिर्फ श्रोता का ध्यान आकृष्ट कर सकता है बल्कि उसे विषय से जोड़ने और उसकी गहराई में उतरने के लिए प्रेरित कर सकता है।

रेडियो पर प्रस्तुतीकरण के संबंध में कुछ खास बिंदुओं पर ध्यान देना जरूरी है :

- **कार्यक्रम का ढाँचा** : विषय के अनुरूप शैक्षिक कार्यक्रम का फार्मेट होना चाहिए। कार्यक्रमों का ढाँचा एक ही तरह का नहीं होना चाहिए। प्रयोग करते रहना चाहिए और श्रोताओं के फीडबैक पर नजर रखनी चाहिए। इस ढाँचे में अन्तःक्रियात्मकता के पहलू को जरूर शामिल करना चाहिए। बिना इसके छात्र से जुड़ाव कठिन है।
- **कसावट** : शैक्षिक कार्यक्रमों को पूरी तरह से कसा हुआ होना चाहिए। उसमें ढीलेपन की कोई गुंजाइश नहीं रखनी चाहिए। उनमें प्रवाह और दिलचस्पी बनाए रखने के लिए नीरस और ढीले पहलुओं को संपादन के जरिए हटा देना चाहिए।
- **प्रस्तुतकर्ता** : शैक्षिक कार्यक्रम की सफलता कार्यक्रम के प्रस्तुतकर्ता या परिचर्चा की स्थिति में संचालक और विशेषज्ञों की क्षमता और योग्यता पर निर्भर करती है। अगर प्रस्तुतकर्ता की आवाज अच्छी और प्रभावशाली है, उसका उच्चारण और शैली दुरूस्त और आकर्षक है, उसमें आत्मविश्वास है और एक सहज प्रवाह है तो वह श्रोता को बांधकर रख सकता है। उसकी न सिर्फ विषय पर गहरी पकड़ होनी चाहिए बल्कि उसे किस तरह से पेश करना है, इसकी भी अच्छी समझ होनी चाहिए।
- **श्रोता की प्रतिक्रिया** : रेडियो पर हर कार्यक्रम श्रोता के लिए है। इसलिए कार्यक्रम पर श्रोता की प्रतिक्रिया को पर्याप्त महत्त्व दिया जाना चाहिए। एक प्रतिक्रिया तो कार्यक्रम के बाद मिलती है जो भविष्य के कार्यक्रमों को सुधारने में उपयोगी होती है लेकिन शैक्षिक कार्यक्रम के निर्माताओं को कार्यक्रम तैयार करते हुए ही संभावित फीडबैक या प्रतिक्रिया के बारे में सोचना या विचार करना चाहिए। उसके मुताबिक कार्यक्रम में फेरबदल या सुधार करना चाहिए।
- **स्पष्टता, सहजता और नवीनता** : शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण में स्पष्टता बहुत महत्त्वपूर्ण है। अगर जिस विषय को प्रस्तुत किया जा रहा है, उसमें स्पष्टता नहीं है तो छात्र की रुचि उस कार्यक्रम में नहीं रह जाएगी। स्पष्टता के लिए जरूरी है कि वह सरल, सहज और नवीन हो। उसमें ताजगी होनी चाहिए।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

बोध प्रश्न

3. रेडियो के जरिए किए जाने वाले शैक्षिक प्रसारणों का उल्लेख कीजिए।
   (i) ……………………………………………………………………………………..
   (ii) ……………………………………………………………………………………..
   (iii) ……………………………………………………………………………………..
   (iv) ……………………………………………………………………………………..
   (v) ……………………………………………………………………………………..
   (vi) ……………………………………………………………………………………..
   (vii) ……………………………………………………………………………………..
   (viii) ……………………………………………………………………………………..
   (ix) ……………………………………………………………………………………..
   (x) ……………………………………………………………………………………..

4. शैक्षिक प्रसारण के प्रमुख चरणों की चर्चा कीजिए। (दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए)
   ……………………………………………………………………………………………
   ……………………………………………………………………………………………
   ……………………………………………………………………………………………
   ……………………………………………………………………………………………
   ……………………………………………………………………………………………
   ……………………………………………………………………………………………
   ……………………………………………………………………………………………
   ……………………………………………………………………………………………
   ……………………………………………………………………………………………
   ……………………………………………………………………………………………

10.4 भाषा और साहित्य का शिक्षण और रेडियो

भाषा और साहित्य के शिक्षण के लिए रेडियो संभवतः सबसे बेहतरीन माध्यम है। दुनियाभर में भाषा शिक्षण के मामले में रेडियो की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। साहित्य की बारीकियों को समझने और समझाने के लिए रेडियो का खूब इस्तेमाल हुआ है। वस्तुतः अपनी प्रकृति में रेडियो भाषा और साहित्य का माध्यम है।

10.4.1 रेडियो और भाषा शिक्षण

श्रव्य माध्यम होने के कारण रेडियो भाषा शिक्षण के लिए एक उपयुक्त माध्यम है। शब्दों का उच्चारण किस तरह किया जा सकता है, यह रेडियो के जरिए विद्यार्थियों को बेहतर तरीके से बताया जा सकता है। इसी तरह वाक्य संरचना और व्याकरण के बारे में भी रेडियो के माध्यम से शिक्षित किया जा सकता है। रेडियो के जरिए किसी भी भाषा के बोले जाने वाले रूप से विद्यार्थियों को परिचित कराया जा सकता है। इसके अलावा किसी भी भाषा के मुहावरों और उसके शब्द भंडार को रेडियो के माध्यम से श्रोताओं तक पहुंचाया जा सकता है।

बीबीसी की हिंदी सेवा के माध्यम से न जाने कितने लोगों ने अंग्रेजी भाषा सीखी और आज उसका इस्तेमाल कर रहे हैं। इसी तरह से देश के अंदर विभिन्न भाषाओं को सिखाने का एक माध्यम रेडियो हो सकता है।

10.4.2 रेडियो और साहित्य

शिक्षण साहित्य के प्रसार के लिए रेडियो एक बेहतरीन माध्यम है। शैक्षिक कार्यक्रमों के जरिए रेडियो से छात्रों को साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिचित कराया जा सकता है। रेडियो के सृजनात्मक कार्यक्रमों के जरिए छात्रों में साहित्य के प्रति न सिर्फ रुचि पैदा की जा सकती है बल्कि उनके अंदर साहित्य में रस लेने की क्षमता भी पैदा की जा सकती है। रेडियो के जरिए साहित्य शिक्षण की एक सबसे बड़ी खूबी यह है कि उसके माध्यम से स्वयं साहित्यकारों को अपने गद्य या कविता की प्रस्तुति के लिए कहा जा सकता है और वह अनुभव साहित्य के हर छात्र के लिए बहुत रोमांचक हो सकता है। लेकिन उपन्यासों और लंबी कहानियों के शिक्षण में पूरे उपन्यास या कहानी को दोहराने के बजाय उसके कुछ प्रमुख अंशों का पाठ करते हुए विद्यार्थियों को उसके महत्व से अवगत कराया जा सकता है। इसी तरह लंबी कविता के प्रमुख अंशों के माध्यम से उसके भावार्थ और संदेश को स्पष्ट किया जा सकता है। विभिन्न रचनाओं पर प्रमुख आलोचकों के बीच परिचर्चा के जरिए उस रचना के विभिन्न पहलुओं को सामने लाया जा सकता है।

10.5 विज्ञान और सामाजिक विज्ञान का शिक्षण और रेडियो

विज्ञान और सामाजिक विज्ञानों के शिक्षण में भी रेडियो अहम भूमिका निभा सकता है। हालांकि विज्ञान एक प्रायोगिक विषय है और रेडियो के जरिए विज्ञान के पाठों का शिक्षण थोड़ा कठिन कार्य है लेकिन सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के लिए तो रेडियो एक श्रेष्ठ माध्यम है।

10.5.1 रेडियो और विज्ञान

शिक्षण विज्ञान शिक्षण के क्षेत्र में रेडियो की सबसे अहम भूमिका छात्रों में विज्ञान के प्रति रुचि पैदा करने में है। इसके अलावा रेडियो के माध्यम से छात्रों और बाकी श्रोताओं में एक वैज्ञानिक चेतना पैदा की जा सकती है। रेडियो पर विज्ञान संबंधी कार्यक्रमों की लोकप्रियता बताती है कि अगर विज्ञान को जीवन से जोड़कर पेश किया जाए तो लोगों की उसमें सहज ही दिलचस्पी पैदा हो जाती है। भारत जैसे देश में जहां अब भी अंधविश्वासों और पोंगापंथी का काफी दबदबा है, वहां रेडियो के जरिए लोगों में वैज्ञानिक समझ पैदा की जा सकती है।

इसके अलावा कृषि विज्ञान और पशुपालन जैसे क्षेत्रों में नई जानकारियों से श्रोताओं को अवगत कराया जा सकता है और उन्हें उनके इस्तेमाल के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इसी तरह स्वास्थ्य और चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में हो रही प्रगति की भी जानकारी शैक्षिक प्रसारणों के जरिए दी जा सकती है।

रेडियो के लिए विज्ञान के शैक्षिक कार्यक्रमों को तैयार करते हुए इस बात का ध्यान रखना बहुत जरूरी है कि वे कार्यक्रम सूचनात्मक होने के साथ–साथ दिलचस्प भी हो। इसके लिए रूपक का सहारा लिया जा सकता है। रेडियो रूपकों के जरिए विज्ञान की जटिल प्रक्रियाओं को भी सरल तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है।

10.5.2 रेडियो और सामाजिक विज्ञानों का शिक्षण

सामाजिक विज्ञान के विभिन्न अनुशासनों–इतिहास, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान आदि की शिक्षा के लिए रेडियो एक उपयोगी माध्यम है। इन सभी विषयों में परिचर्चा और व्याख्यान के माध्यम से छात्रों को न सिर्फ पाठ्यक्रम आधारित शिक्षा दी जा सकती है बल्कि अनौपचारिक शिक्षा के विद्यार्थियों को भी इतिहास और राजनीति विज्ञान के बारे में बताया जा सकता है। समाज विज्ञान के शिक्षण में इस बात का ध्यान जरूर रखा जाना चाहिए कि विभिन्न अवधारणाओं को वास्तविक जीवन के उदाहरणों के जरिए समझाया जाए। समाज विज्ञान के शिक्षण में भी यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि कार्यक्रम नीरस और उबाऊ न हो। इसके लिए इतिहास से संबंधित शैक्षिक कार्यक्रमों में रेडियो नाटक का सहारा लिया जा

सकता है जबकि राजनीति विज्ञान से संबंधित कार्यक्रम में परिचर्चा और रेडियो रूपकों की मदद ली जा सकती है।

10.6 शिक्षा के माध्यम के रूप में रेडियो का मूल्यांकन

भारत में शिक्षा के एक माध्यम के रूप में रेडियो का इस्तेमाल काफी समय से हो रहा है। हालांकि शिक्षा के एक माध्यम के रूप में रेडियो में जितनी संभावनाएं हैं, उसका पूरा इस्तेमाल तो नहीं हो सका है लेकिन हाल के वर्षों में रेडियो का प्रयोग लगातार रेडियो लेखन और शिक्षा बढ़ता जा रहा है। रेडियो के जरिए शिक्षा के प्रसार में काफी मदद मिली है। अब तक के अनुभव बहुत सकारात्मक रहे हैं। इसके बावजूद अभी बहुत कुछ करना बाकी है। कहने की जरूरत नहीं है कि अभी भी रेडियो को शिक्षा के एक माध्यम के रूप में बहुत आगे जाना है।

10.6.1 शैक्षिक रेडियो प्रसारणों का मूल्यांकन

इसमें कोई दो राय नहीं है कि रेडियो के शैक्षिक प्रसारणों से लाखों लोगों को लाभ हआ है। रेडियो के शैक्षिक प्रसारणों ने औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के अलावा दूर शिक्षा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान किया है। देश में जैसे–जैसे संचार माध्यमों का विस्तार हो रहा है और शिक्षा के प्रसार की जरूरत पर जोर दिया जा रहा है, वैसे–वैसे शिक्षा के एक माध्यम के रूप में रेडियो के प्रयोग का महत्व बढ़ रहा है।

लेकिन शैक्षिक रेडियो में अब भी नए–नए प्रयोगों की बहुत गुंजाइश हैं। न सिर्फ शैक्षिक रेडियो की पहुंच बढ़ाने की जरूरत है बल्कि उसकी गुणवत्ता में भी सुधार की आवश्यकता महसूस की जा रही है। आज जरूरत शैक्षिक रेडियो के दायरे को बढ़ाने की है। यही नहीं, स्कूलों से लेकर विश्वविद्यालयों तक को रेडियो के इस्तेमाल के लिए प्रोत्साहित करने की जरूरत है। इसके साथ–साथ. शैक्षिक रेडियो को विद्यार्थियों के सच्चे साथी के रूप में विकसित करने की जरूरत है।

10.2.2 रेडियो से शिक्षा : समस्याएँ और समाधान

ऐसा नहीं है कि शैक्षिक रेडियो के सामने समस्याएं नहीं है। उसके सामने कई समस्याएं हैं। इन समस्याओं और उनके समाधान को इस तरह से रखा जा सकता है रू

- **तकनीकी समस्याएँ** : रेडियो तकनीक में विकास के बावजूद आज भी देश के कई हिस्सों में रेडियो प्रसारणों को सही तरीके से सुनने में दिक्कत आती है क्योंकि उसके संकेत कमजोर होते हैं। इसके लिए जरूरी है कि रेडियो में प्रसारण की बेहतर एफएम तकनीक को बढ़ावा दिया जाए और शैक्षिक प्रसारण उसी के जरिए किए जाएं।
- **आर्थिक** : हालांकि हाल के वर्षों में तकनीक के विकास के साथ रेडियो सेटों की कीमत में काफी कमी आई है और रेडियो स्टेशन की स्थापना और संचालन का खर्च भी कम हुआ है लेकिन भारत जैसे विकासशील देश में आज भी शैक्षिक रेडियो का खर्च उठाना एक बड़ी चुनौती बना हुआ है। इसके लिए जरूरी है कि सरकार शैक्षिक रेडियो को बढ़ावा देने के लिए रेडियो सेट पर सब्सिडी दे और रेडियो स्टेशनों की स्थापना में सहयोग करे। इसके अलावा गैर सरकारी संगठनों और शैक्षिक संस्थाओं को भी इस क्षेत्र में पहल करनी चाहिए।
- **संस्थागत समस्याएँ** : देश में आज भी शैक्षिक रेडियो का स्वतंत्र संस्थागत ढांचा नहीं बन पाया है। इसके कारण शैक्षिक रेडियो के विकास में समस्याएं आ रही है। इसलिए यह जरूरी हो गया है कि शैक्षिक रेडियो को प्रोत्साहन देने के लिए देश में एक स्वतंत्र संस्था बनाई जाए।

बोध प्रश्न

5. भाषा और साहित्य के शिक्षण में रेडियो का बेहतर उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

....
....
....
....
....

6. विज्ञान शिक्षण में रेडियो किस प्रकार कारगर सिद्ध हो सकता है? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

....
....
....
....
....

7. रेडियो से शिक्षा संबंधी कार्यक्रम में आने वाली बाधाओं का उल्लेख कीजिए। (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)

....
....
....
....
....

10.7 सारांश

रेडियो एक ऐसा सशक्त और प्रभावशाली माध्यम है जिसके जरिए न सिर्फ उन लोगों तक पहुंचा जा सकता है जो औपचारिक शिक्षा के दायरे से बाहर हैं बल्कि उनको भी बेहतर शिक्षा दी जा सकती है जो औपचारिक शिक्षा के तहत अध्ययन कर रहे हैं। रेडियो की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह शिक्षा का एक सस्ता, सर्वसुलभ, स्थानीय जरूरतों के अनुकूल और बहुत सृजनात्मक माध्यम है।

यही कारण है कि दुनिया भर में शिक्षा के एक माध्यम के रूप में रेडियो का खूब इस्तेमाल हआ है और आज भी हो रहा है। अच्छी बात यह है कि नीति निर्माताओं और शैक्षिक नियोजनकारों ने शिक्षा के प्रसार में रेडियो की भूमिका और महत्त्व को स्वीकार करते हुए सामुदायिक रेडियो और शैक्षिक रेडियो (जैसे ज्ञानवाणी) को बढ़ावा देना शुरू किया है।

शिक्षा के एक माध्यम के बतौर रेडियो की कुछ शक्ति है तो कुछ सीमाएं भी हैं। रेडियो वस्तुतः मौखिक परंपरा का वाहक है। भारत वाचिक परंपरा का देश है। इस तरह रेडियो भारतीय परंपरा के बहुत अनुकूल माध्यम है। रेडियो की दूसरी सबसे बड़ी शक्ति यह है कि वह अपने श्रोताओं की कल्पनाशक्ति पर पर निर्भर है। कहने की जरूरत नहीं है कि शिक्षा बहुत हद तक विद्यार्थी की कल्पनाशक्ति पर निर्भर है। रेडियो एक वैयक्तिक माध्यम है। हालांकि वह एक साथ हजारों लाखों लोगों तक पहुंच सकता है लेकिन दूसरी ओर

उसकी खूबी यह है कि उसी समय वह हर व्यक्ति को ऐसे संबोधित कर सकता है जैसे उन्हीं से मुखातिब हो।

रेडियो की एक और खूबी यह है कि उसके जरिए बिना कहीं गए भी दुनियाभर की तमाम जगहों और विभिन्न किस्म की छवियों को शब्दों और आवाजों के माध्यम से जीवंत किया जा सकता है। इसी से जुड़ी रेडियो की एक खूबी यह है कि वह बिना किसी समस्या के समय और कालखंड के इस पार या उस पार आ जा सकता है।

लेकिन रेडियो की कुछ सीमाएं भी हैं। रेडियो की पहली सीमा यह है कि इसमें श्रोता को पूरी तरह से अपनी श्रवण शक्ति पर निर्भर रहना पड़ता है। जबकि उसके पास आंख, नाक जैसी इंद्रियां भी हैं। ऐसे में अगर श्रोता से कोई भी चीज छूट जाए या किसी कारण से कोई चीज समझ में न आए तो प्रसारण प्रभावी नहीं रह जाता। इसी से जुड़ी दूसरी समस्या है कि आमतौर पर रेडियो का श्रोता उसे पृष्ठभूमि में रखकर सुनता है यानी रेडियो के अधिकतर श्रोता उसे सुनते हुए कुछ और भी कर रहे होते हैं।

इस कारण वह बहुत ध्यान से और केंद्रित होकर रेडियो नहीं सुनते हैं। शैक्षिक प्रसारण के लिए यह बड़ी चुनौती है क्योंकि अगर श्रोता (विद्यार्थी) का पूरा ध्यान शैक्षिक प्रसारण पर नहीं होगा तो कार्यक्रम का उद्देश्य विफल हो जाएगा।

शिक्षा के इन दोनों प्रमुख रूपों– औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की उल्लेखनीय भूमिका हो सकती है। औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की भूमिका एक सहायक की हो जाती है। उसे कक्षा और पाठ्यक्रम आधारित शिक्षण पर जोर देने के अलावा उसमें मददगार की भूमिका निभानी चाहिए। अनौपचारिक शिक्षा में कई बार शिक्षक और आमने–सामने का शिक्षण भी होता है लेकिन वह पर्याप्त नहीं होता या अनियमित होता है या बहत संक्षिप्त समय के लिए होता है, इसलिए रेडियो जैसा माध्यम उनके शिक्षण का प्रमुख माध्यम बन जाता है।

दूर शिक्षा में रेडियो का बहुत अधिक महत्त्व है। एक तरह से दूर शिक्षा का छात्र रेडियो के जरिए अपने शिक्षण संस्थान से जुड़ा रहता है। उसे रेडियो के माध्यम से अपने विषय के शिक्षकों के व्याख्यान, चर्चाएं और सवाल–जवाब सुनने का अवसर मिल जाता है। इस तरह उसे शिक्षक की कमी महसूस नहीं होती है।

शैक्षिक प्रसारण की सफलता कई कारकों पर निर्भर करती है। इसलिए शैक्षिक प्रसारण के लिए कार्यक्रम तैयार कने से पहले पर्याप्त तैयारी बहुत जरूरी है। इस तेयारी के तहत शैक्षिक कार्यक्रम बना रही टीम को कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं पर गहराई से विचार करना चाहिए। जैसे कार्यक्रम किनके लिए बनाया जा रहा है (यानी श्रोता या लक्षित समूह), कार्यक्रम का उद्देश्य क्या है, वह कितनी देर का होगा, उसका स्वरूप या होगा। (यानी वह व्याख्यान के रूप में होगा या चर्चा या कक्षा के रूप में या फिर ड्रामा अथवा फीचर के रूप में), उसकी स्क्रिप्ट की मुख्य थीम क्या होगी, उसमें संगीत और साउंड इफेक्ट्स का किस तरह से इस्तेमाल करना है आदि।

भाषा और साहित्य के शिक्षण के लिए रेडियो संभवतः सबसे बेहतरीन माध्यम है। दुनियाभर में भाषा शिक्षण के मामले में रेडियो की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। साहित्य की बारीकियों को समझने और समझाने के लिए रेडियो का खूब इस्तेमाल हुआ है। विज्ञान और सामाजिक विज्ञानों के शिक्षण में भी रेडियो अहम भूमिका निभा सकता है। हालांकि विज्ञान एक प्रायोगिक विषय है और रेडियो के जरिए विज्ञान के पाठों का शिक्षण थोड़ा कठिन कार्य है लेकिन सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के लिए तो रेडियो एक श्रेष्ठ माध्यम है।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि रेडियो के शैक्षिक प्रसारणों से लाखों लोगों को लाभ हुआ है। रेडियो के शैक्षिक प्रसारणों ने औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के अलावा दूर शिक्षा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान किया है।लेकिन शैक्षिक रेडियो में अब भी नए–नए प्रयोगों की बहुत गुंजाइश हैं। न सिर्फ शैक्षिक रेडियो की पहुंच बढ़ाने की जरूरत है बल्कि उसकी गुणवत्ता में भी सुधार की आवश्यकता महसूस की जा रही है। आज जरूरत शैक्षिक रेडियो के दायरे को बढ़ाने की है। यही नहीं, स्कूलों से लेकर विश्वविद्यालयों तक को रेडियो के इस्तेमाल के लिए प्रोत्साहित करने की जरूरत है।

कोरोना महाकारी के दौरान रेडियो ने औपचारिक शिक्षा के लिये शैक्षिक प्रसारण कर रेडियो की सशक्त भूमिका को पुनः स्थापित किया है। बच्चों के एक बड़े वर्ग ने अपनी दैनिक कक्षाएँ, रेडियो के माध्यम से प्रसारण सुनकर पूरी की। यद्यपि यह कोई पहला अवसर नहीं था जब रेडियो पर शैक्षिक प्रसारण किया गया हो। अपने आरम्भिक वर्षों में ही रेडियो ने शिक्षा पाठों/भाषा पाठों तथा विज्ञान कक्षाओं के प्रसारण शुरू कर दिये थे तथा ग्रामीण बच्चों की शिक्षा में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

कोरोना महामारी के आने के कारण इस माध्यम से फिर से सफल प्रयोग हुआ। अभी मार्च का ही महीना था और नये शिक्षण सत्र की शुरूआत होनी थी, महामारी के कारण सभी शिक्षण संस्थान, स्कूल तथा कॉलेज बंद कर देने पड़े। राज्य सरकारों ने अपने-अपने शिक्षा विभागों से घर पर विद्यार्थियों को कैसे क्लासरूम की तरह शिक्षा दी जा सकती है, इस पर विचार करने को कहा, इस मुहिम में शहरी बच्चों या जिनके पास इंटरनेट सुविधा उपलब्ध थी उनके लिये ऑनलाईन कक्षाएँ चलाये जाने पर सहमति बनी परन्तु विद्यार्थियों का एक बड़ा वर्ग ऐसा था जिनके पास ये सुविधाएँ नहीं थी या जो छोटे शहरों व गाँवों के विद्यार्थी थे उन्हें कैसे नियमित कक्षाओं से जोड़ा जाये यह एक कठिन समसया थी। इसके विकल्प के रूप में रेडियो पर सबकी दृष्टि गयी और सभी राज्यों में स्थित आकाशवाणी केन्द्रों पर शिक्षा विभागों से रेडियो पर कक्षा चलाने की माँग आने लगी। प्रसार भारतीय में इस पर गहन चिन्तन हुओ तथा स्थिति की गंभीरता को देखते हुए शिक्षा विभागों को रेडियो पर समय दिया गया ताकि वो अपनी औपचारिक शिक्षा की गतिविधियाँ रेडियो पर जारी रख सकें।

कोरोना काल का यह प्रयोग बड़ा ही सफल रहा। रेडियो के लिए शिक्षा विभाग के विशेषज्ञों ने कक्षाओं के पाठ्यक्रम के अनुसार प्रसारण सामग्री तैयार की तथा रेडियो द्वारा दिये गये निर्धारित समय पर उनका प्रसारण किया गया। बच्चों की पढ़ाई चल निकली और घर रहते हुए भी बच्चों ने स्कूल का आनन्द लिया। शिक्षा विभाग की पूरी तरह सन्तुष्ट रहा और समय से अपने पाठ्यक्रमों को पूरा कर पाया। इस प्रयोग से यह साबित हो गया कि भविष्य की शिक्षा व्यवस्था खासतौर से दूरस्थ शिक्षा में रेडियो एक कारगर माध्यम के रूप में प्रयोग किया जा सकता है तथा इंटरनेट व स्मार्ट फोन के इन युग में इन साधनों से वंचित बच्चों को एक अच्छे विकल्प के रूप में रेडियो का निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

10.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. देखिए 10.2
2. (i) श्रोताओं की कल्पना शक्ति का उपयोग (ii) एक साथ हजारों–लाखों श्रोताओं तक पहुँच (iii) आवाज का माध्यम
3. (i) समृद्धिमूलक प्रसारण (ii) प्रशिक्षणमूलक प्रसारण (iii) विस्तार प्रसारण (iv) विकासमूलक प्रसारण
4. देखिए 10.3
5. देखिए 10.4
6. देखिए 10.5
7. तकनीक समस्याएँ, आर्थिक बाधा, संस्थागत समस्याएँ